पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

वर्षा जल संचयन

भू–मरूस्थलीकरण रोकने का अचूक उपाय

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

वर्षा जल संचयन

भू–मरूस्थलीकरण रोकने का अचूक उपाय

वर्षा जल संचयन क्या है?

बारिश के पानी को व्यर्थ बहने से रोककर उपयोगी कार्यों हेतु बचाना ही वर्षा जल संचयन है। संचित वर्षा जल न केवल भूमि की ऊपरी परत को नम रखकर हरियाली बढ़ाता है अपितु अनेक कार्यों हेतु जल की आपूर्ति करने में भी सक्षम है।

वर्षा जल संचयन की पारितंत्र सेवाओं के सुधार व वृद्धि में भूमिका

वर्षा जल का संचयन, भूमिगत जल के स्तर को सुधारने के साथ साथ जल की कमी से बंजर होती जा रही भूमि को बचाकर हराभरा करने और प्रकृति में जल के चक्र को बनाये रखने में अहम् भूमिका निभाता है। इस प्रकार पारितंत्र से जुडी सेवाओं को बढ़ाने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

अकोला गांव, म.प्र. में वर्षा जल संचय हेतु तैयार तालाब

वर्षा जल संचयन हेतु तैयार चौका संरचनायें

वर्षा जल संचयन के आसान तरीके

- घर की छतों में गिरने वाले वर्षा जल संचय हेतु भूमिगत टैंक बनायें।
- सामुदायिक स्तर पर मिलजुल कर तालाब, कुंवे, बाबड़ियां, आदि का निर्माण करें।
- चौका प्रणाली अपनायें, जिसके तहत चारागाहों व सामुदायिक भूमि में छोटे छोटे गड्ढे (चौका) बनाकर बारिश तथा सतही पानी को रोकें।
- गैबियन संरचनाओं का निर्माण करें।

वर्षा जल संचयन के लाभ

- कृषि, बागवानी आदि हेतु जीवनदायी सिंचाई।
- भूमिगत जल स्तर को बढ़ाना।
- मिट्टी में नमी की मात्रा को बढ़ाना।
- बाढ़ के प्रभाव को कम करना व उपजाऊ मिट्टी के बहाव को रोकना।
- घरेलु कार्यों, मवेशियों व अन्य उपयोगों हेतु जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करना।
- सबसे महत्वपूर्ण जल के संकट से जूझ रहे प्राणियों के जीवन को सुगम व सुरक्षित रखना।

जल संचयन संरचनाओं की देखभाल

- जल संचयन करने वाली संरचनाओं की जल संचयन क्षमता को बनाये रखने के लिए जरूरी है समय समय पर इनमें जमा हो जाने वाली गाद की सफाई।
- इन संरचनाओं की सफाई की अवधि गाद की मात्रा व इन संरचनाओं की जल संचयन क्षमता पर निर्भर करती है। अधिक गाद होने पर या जल संचयन क्षमता वर्षा जल संचयन हेतु तैयार चौका संरचनायें के कम हो जाने पर जल्द से जल्द इन संरचनाओं की सफाई कर देनी चाहिए।
- इन संरचनाओं में जल के प्रवेश व निकास मार्ग की सफाई का व रखरखाव का भी अत्यंत ध्यान देना चाहिए।
- इन संरचनाओं के किनारे व मेढ़ों पर दरार व नालियां बनने पर उन्हें तुरंत बंद कर देना चाहिए।

तालाब के किनारे सब्जियों का उत्पादन